सन् 1906 में लिखे गए गोर्की के मां उपन्यास में क्रांतिकारी मानवतावाद की बहुआयामी झलक देखने को मिलती है इस उपन्यास में क्रांतिपूर्व परिस्थिति में मजदूर वर्ग का जीवन, निरकुंश राजतंत्र और पूंजीपति (बुर्जुआ) वर्ग के खिलाफ उनका संघर्ष, उनकी क्रांतिकारी चेतना में वृद्धि तथा उसमें से आगे आये हुए पथ- प्रदर्शकों एवं क्रांतिकारी नेताओं को चित्रित किया गया है। सच्ची घटनाओं के ताने बाने से बुना है गोर्की ने अपने इस बहुचर्चित उपन्यास मां को। इस उपन्यास को रूस के परंपरागत साहित्य और समाजवादी आंदोलन से प्रेरित नवसाहित्य का सेतु कहा जा सकता है।

मां उपन्यास के नायकों के गाढ़े समय में गोर्की अपने पाठकों से विदा ले लेते हैं। उनके उपन्यास का नायक पावेल (यह क्रांतिकारी रूसी साहित्य का एक लोकप्रिय नाम है, इस उपन्यास से प्रभावित होकर दुनिया के कई देशों में पालकों ने अपने बच्चों का नाम पावेल रखा है) ब्लासोव हजारों किलोमीटर की दूरी पर सदा के लिए साइबेरिया में निर्वासित किया जाने वाला है। उसकी मां पेलागेया निलोवना (उपन्यास की केंद्रीय पात्र) उस सूटकेस के साथ, जिसमें मुकदमे के समय उसके पुत्र पावेल के भाषण के छपे हुए गैरकानूनी परचे भरे थे, राजनैतिक पुलिस वालों के हत्थे चढ़ जाती है। वे उसका अपमान करते हैं, मारते पीटते हैं, मगर वह इर्द -गिर्द जमा लोगों को जीवन की सच्चाई बताने का मौका हाथ से नहीं जाने देती.....वह चिल्लाकर अत्याचारी पुलिस अधिकारियों से कहती है- सच्चाई को तो खून की नदियों में भी नहीं डुबोया जा सकता.....बेवकूफों, तुम जितना अत्याचार करोगे, हमारी नफरत उतनी ही बढ़ेगी।

मां कोई काल्पनिक उपन्यास नहीं है बल्कि गोर्की ने इसे क्रांतिपूर्व रूस के झंझावाती दौर के जीते- जागते पात्रों से सजाया था। उनके उपन्यास का पावेल महान अक्टूबर समाजवादी क्रांति के तपे-तपाये सैनिक प्योत्र जालोमोव थे और पेलागेया निलोवना उनकी मां आन्ना किरीलोवना थीं। प्योत्र जालोमोव पेशेवर कम्युनिस्ट क्रांतिकारी थे जो रूसी सामाजिक जनवादी श्रमिक पार्टी उस समय रूस की कम्युनिस्ट पार्टी (बोल्शेविक) का

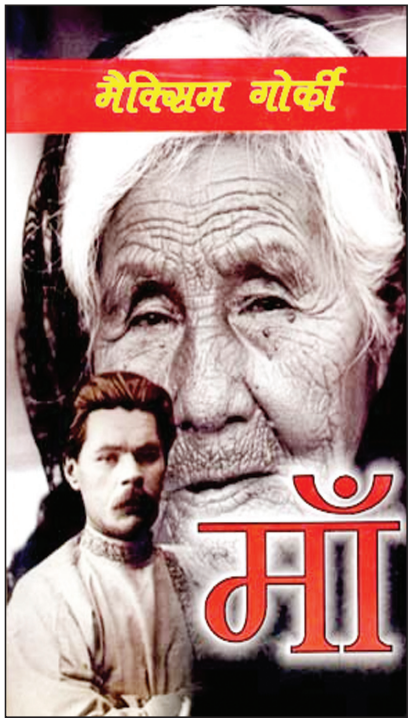

यही नाम था, के सक्रिय कार्यकर्ता थे। जारशाही अदालत ने उन्हें साइबेरिया मे निर्वासन की सजा दी थी। गोर्की की मदद से जालोमोव साइबेरिया से भाग निकले थे।

प्योत्र जालोमोव, पीटर्सबर्ग में गुप्त बोल्शेविक संगठन में काम करने लगे और 1905 की क्रांति के समय उन्होंने मास्को के हथियारबंद मजदूर दस्तों के संगठन में भाग लिया। भावी उपन्यास के लेखक और भावी पावेल ब्लासोव के मूल रूप कई साल से एक -दूसरे को जानते थे, मगर केवल पत्रों द्वारा ही । गोर्की के साथ प्योत्र जालोमोव की पहली मुलाकात 1905 की गरमी में पीटर्सबर्ग के निकट कुओकाला में गोर्की के देहाती बंगले पर हुई। सख्त और जानलेवा बीमारी और डॉक्टरों की मनाही के बावजूद प्योत्र जालोमोव काम करते रहे। उन्होंने अपने क्रांतिकारी जवानी और गोर्की से मुलाकातों के संस्मरण लिखे, गोर्की की मां उपन्यास के पाठकों के साथ बड़ा पत्र व्यवहार करते रहे।

प्योत्र जालोमोव बहुत साल तक जिन्दा रहे और 1955 में 78 साल की उम्र में उनकी मृत्यु हुई। उनकी मां आन्ना किरीलोवना ने भी काफी लंबी उम्र पाई। उनके बारे में गोर्की ने लिखा है- सोर्मोवो में पहली मई के जुलूस के लिए 1902 में सजा पाने वाले प्योत्र जालोमोव की मां का ही रूप पेलागेया निलोवना थीं। वे गुप्त संगठन में काम करती थीं और भिक्षुणी के भेस में साहित्य ले जाती थीं.....। आन्ना किरीलोवना का जन्म 1849 में एक मोची के घर में हुआ। उनकी जिंदगी कठिन रही। पति की मृत्यु के बाद तो उन्हें खासतौर पर बहुत बुरा वक्त देखना पड़ा -उनके सात बच्चे थे..... वे विधवा घर के अंधेरे और ठंडे तहखाने में अपने बच्चों के साथ रहती थीं। मां की दृढ़ता और श्रमप्रियता ने ही परिवार को बचाया। बच्चे धीरे-धीरे बड़े होते गए- कुछ काम करने लगे, कुछ पढ़ते रहे। प्योत्र क्रांतिकारी मंडल में शामिल हो गए जल्द ही पूरा जालोमोव परिवार क्रांतिकारी आंदोलनों में हिस्सा लेने लगा।

यह सच है कि रूस के गोर्की (1868-1936) भारत के प्रेमचंद (1880-1936) तथा चीन के लू शून (1881-1936)- तीनों लेखकों ने कला के लिए सिद्धांत को अस्वीकार किया। गोर्की लेखन-कार्य को लेखक का निजी मामला मानने को हरगिज तैयार नही थे। जीवन से अलग रहने, तटस्थता या पलायन की प्रेरणा देने वाली कला अथवा साहित्य गोर्की को किसी रूप में भी स्वीकार्य नहीं था। यही कारण है, केवल शब्दों में ही मानवता की दुहाई देने वाले लोगों के